



व्यापार रिपोर्ट

आपके व्यवसाय की दिशा, साझेदारी व वृद्धि का विश्लेषण

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	अभय शर्मा (काल्पनिक)
जन्म तिथि व समय	12 जुलाई 1992 • 09:45
जन्म स्थान	जयपुर
लग्न • राशि • नक्षत्र	सिंह • वृश्चिक • ज्येष्ठा
वर्तमान दशा	सूर्य महादशा (2023–2029)
रिपोर्ट तिथि	24 सितम्बर 2026 • प्रातः 8:01

॥ पारस वाणी ॥

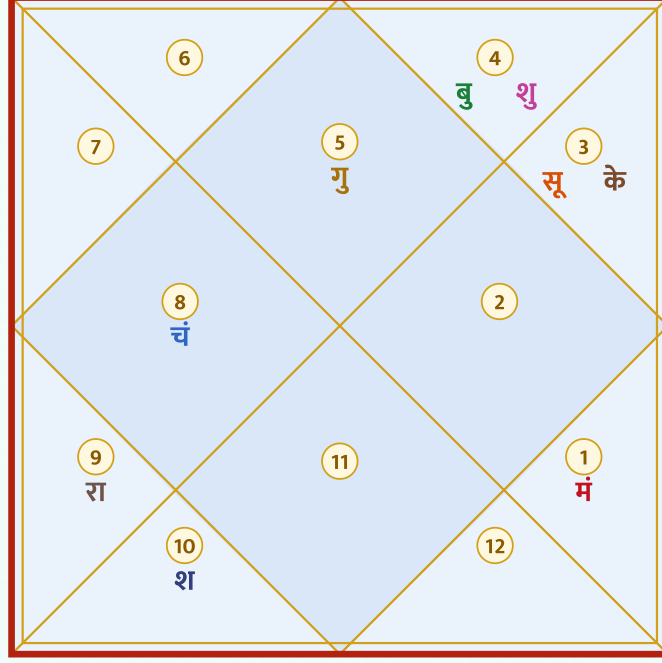
parasvani • वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है



जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुंडली परिचय



जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	सिंह	1	ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

विंशोत्तरी दशा — अंतर्दशा तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली म हा द शा • वर्तमान ◀ चिह्न से

सूर्य महादशा ◀

19/04/2023 – 19/04/2029

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◀	23/02/2026	05/02/2027
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा

19/04/2029 – 19/04/2039

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

अ भी च ल र ही व अ ग ली यो गि नी • वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी ◀

स्वामी बुध • 5 वर्ष • 20/08/2024 – 20/08/2029

अंतर-योगिनी	से	तक
भद्रिका	20/08/2024	01/05/2025
उल्का	01/05/2025	01/03/2026
सिद्धा ◀	01/03/2026	19/02/2027
संकटा	19/02/2027	31/03/2028
मंगला	31/03/2028	21/05/2028
पिंगला	21/05/2028	30/08/2028
धान्या	30/08/2028	30/01/2029
भ्रामरी	30/01/2029	20/08/2029

उल्का योगिनी

स्वामी शनि • 6 वर्ष • 20/08/2029 – 21/08/2035

अंतर-योगिनी	से	तक
उल्का	20/08/2029	21/08/2030
सिद्धा	21/08/2030	21/10/2031
संकटा	21/10/2031	19/02/2033
मंगला	19/02/2033	21/04/2033
पिंगला	21/04/2033	20/08/2033
धान्या	20/08/2033	19/02/2034
भ्रामरी	19/02/2034	21/10/2034
भद्रिका	21/10/2034	21/08/2035



व्यापार-कुंडली परिचय

अध्याय 1

व्यापार-कुंडली परिचय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में व्यापार और स्वतंत्र कर्म के लिए कई बलशाली संयोग एक साथ बने हैं — **लग्न में गुरु, नवम भाव में स्वराशि मंगल, और ग्यारहवें भाव में सूर्य**। यह तीनों मिलकर एक ऐसे व्यक्ति की कुंडली बनाते हैं जो अपनी शर्तों पर काम करना चाहता है और जिसमें नेतृत्व की स्वाभाविक क्षमता है।

आपका व्यापारी स्वभाव — लग्न और गुरु से

सिंह लग्न अपने-आप में एक राजकीय संकेत है — यह लग्न उन लोगों को मिलता है जो भीड़ में भी अलग दिखते हैं। लग्न में गुरु बैठे हैं, मित्र राशि में, और उनकी अवस्था युवा है — अर्थात् **गुरु अपना पूरा फल दे रहे हैं**। षड्बल में भी गुरु का बल 9.49 रूप है जो पराशर के न्यूनतम 6.5 से बहुत ऊपर है। इसका सीधा अर्थ है — आपमें दूरदर्शिता, विश्वास जीतने की कला, और बड़े निर्णय लेने की क्षमता है। व्यापार में यही गुण सबसे अधिक काम आते हैं।

गुरु की दृष्टि पाँचवें, सातवें और नवम भाव पर पड़ रही है — यानी बुद्धि, साझेदारी और भाग्य, तीनों को गुरु का आशीर्वाद मिला है। यह दृष्टि किसी भी व्यापारी के लिए एक बड़ी पूँजी है।

भाग्य और उद्यम की शक्ति — नवम और तृतीय भाव से

नवम भाव (भाग्य का भाव) में मंगल अपनी स्वराशि मेष में बैठे हैं — यह हर्ष विपरीत राजयोग का आधार भी है। नवमेश का इस तरह बलवान होना यह बताता है कि आपका भाग्य तब खुलता है जब आप साहस के साथ आगे बढ़ते हैं। रुककर इंतज़ार करना आपकी कुंडली की भाषा नहीं है — **उद्यम से ही आपका भाग्य जागता है**।

तृतीय भाव (पराक्रम और उद्यम का भाव) के स्वामी शुक्र हैं, जो बारहवें भाव में बैठे हैं और अस्त अवस्था में हैं। यहाँ थोड़ी सावधानी चाहिए — छोटे व्यापारिक साहस (नया उत्पाद, नई शाखा, नई पहल) में जल्दबाज़ी से बचिए। योजना पक्की हो तो क़दम उठाइए।

लाभ और साझेदारी — ग्यारहवाँ और सातवाँ भाव

ग्यारहवें भाव (लाभ का भाव) में सूर्य और केतु बैठे हैं। सूर्य का षड्बल तो बहुत ऊँचा है — 9.86 रूप — पर अवस्था मृत है। इसका अर्थ यह है कि **लाभ की संभावना बड़ी है, पर उसे हाथ में आने में श्रम और समय लगता है।** एकाएक बड़ा मुनाफ़ा नहीं, पर धीरे-धीरे टिकाऊ आय — यही इस स्थिति का फल है।

सातवें भाव (साझेदारी) के स्वामी शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं। शनि बलवान हैं, पर वक्री होने से साझेदारी में देरी और जाँच-परख की ज़रूरत रहती है। **हर साझेदार को समय देकर परखिए — जल्दी में किया गया साझेदारी का निर्णय बाद में उलझन देता है।**

मुख्य बातें

- **गुरु लग्न में युवा अवस्था में** — नेतृत्व, दूरदर्शिता और विश्वसनीयता आपकी सबसे बड़ी व्यापारिक शक्ति है।
- **नवम में स्वराशि मंगल** — भाग्य उद्यम से खुलता है; जोखिम से डरने की ज़रूरत नहीं, पर सोच-समझकर उठाएँ।
- **ग्यारहवें भाव में सूर्य बलवान पर मृत अवस्था में** — लाभ टिकाऊ और धीरे आने वाला है, एकाएक नहीं।
- **सातवें भाव के स्वामी शनि वक्री** — साझेदार चुनने में जल्दी मत कीजिए, परखकर आगे बढ़िए।
- **हर्ष विपरीत राजयोग** — कठिनाइयाँ आएँगी, पर उन्हीं से आगे का रास्ता खुलेगा — यह आपकी कुंडली का वरदान है।

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

एकोऽपि ज्ञार्यशुक्राणां लग्नात् केन्द्रगतो यदि ।

अरिष्टं निखिलं हन्ति तिमिरं भास्करो यथा ॥

बुध, गुरु या शुक्र में से एक भी लग्न से केन्द्र में हो, तो वह सारे अरिष्ट को वैसे मिटा देता है जैसे सूर्य अंधकार को।

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय १०



व्यापारिक योग्यता व दिशा

अ ध्या य 2

व्यापारिक योग्यता व दिशा

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में व्यापार की क्षमता सतह पर नहीं, गहराई में बनी है — यह वह व्यक्ति की कुंडली है जो **सही दिशा और सही समय पाने पर असाधारण परिणाम दे सकता है**, पर जिसे अपनी असली ताक़त पहचानने में थोड़ा समय लगता है।

आपकी स्वाभाविक व्यापारिक बुद्धि — गुरु और लग्न से

आपका लग्न सिंह है और लग्न में गुरु विराजमान हैं — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, और पूरे बल के साथ (षड्बल 9.49 रूप, जो न्यूनतम 6.5 से कहीं ऊपर है)। यह बहुत विशेष स्थिति है। **गुरु लग्न में हों तो व्यक्ति का व्यक्तित्व ही उसकी सबसे बड़ी पूँजी बन जाता है** — लोग आप पर भरोसा करते हैं, और यह भरोसा किसी भी व्यापार की नींव है।

गुरु का स्वभाव है — विस्तार, समझदारी, और दूरदर्शिता। लग्न में बैठे गुरु यह बताते हैं कि आप किसी भी व्यापारिक बातचीत में जल्दी ही दूसरे का विश्वास जीत लेते हैं। आपकी वाणी में एक परिपक्वता है जो उम्र से अधिक लगती है। पंचम भाव (बुद्धि व नीति) के भावेश भी गुरु हैं और वे लग्न में बैठे हैं — यानी **आपकी रणनीतिक सोच और व्यक्तित्व एक ही ग्रह से संचालित होते हैं**। यह व्यापारी के लिए दुर्लभ बात है।

साथ ही, कुंडली में **गजकेसरी योग** बन रहा है — गुरु लग्न (केंद्र) में हैं और चंद्र चतुर्थ भाव में। यह योग यश, बुद्धि और समाज में सम्मान देता है। व्यापार में नाम बनाने की क्षमता इसी योग से आती है।

व्यापार में कौन-सी दिशा सबसे उपयुक्त है — दशम और सप्तम भाव से

दशम भाव (कर्म और व्यवसाय) का स्वामी शुक्र है — पर वे बारहवें भाव में हैं, शत्रु राशि में, और अस्त अवस्था में। यह बताता है कि **पारंपरिक नौकरी या किसी और के अधीन काम करना आपके लिए सहज नहीं रहा होगा** — वहाँ संतुष्टि नहीं मिलती। शुक्र की यह स्थिति बारहवें भाव में यह भी संकेत करती है कि आपकी असली कमाई और पहचान परदे के पीछे काम करने से नहीं, **सामने आकर, अपने नाम से काम करने से** बनेगी।

दशमांश (D10) देखें तो लग्न कुम्भ है, और पहले भाव में सूर्य विराजमान हैं — यह व्यक्तित्व-आधारित व्यवसाय का संकेत है। D10 में मंगल और शनि तीसरे भाव में हैं — परिश्रम और अनुशासन से लाभ। **D10 में बुध नवम भाव (भाग्य) में हैं** — यह बताता है कि संचार, शिक्षा, परामर्श या विश्लेषण से जुड़े व्यापार में आपका भाग्य अधिक साथ देता है।

सप्तम भाव (साझेदारी) का स्वामी शनि है जो छठे भाव में स्वराशि मकर में, वक्री हैं। **यह स्थिति बताती है कि व्यापारिक साझेदारी में सतर्कता ज़रूरी है** — जल्दी में या भावनाओं में बहकर साझेदार चुनना नुकसानदेह हो सकता है। शनि छठे भाव में हैं जहाँ उन पर बुध की दृष्टि भी है — **लिखित अनुबंध, स्पष्ट शर्तें और धैर्य से चुनी गई साझेदारी ही टिकती है**।

किन क्षेत्रों में आगे जाएँ — ग्यारहवाँ भाव और दशमांश से

ग्यारहवें भाव (लाभ) में सूर्य और केतु हैं। सूर्य मिथुन में हैं — यह लेखन, संचार, मीडिया, प्रौद्योगिकी और ज्ञान-आधारित व्यापार की दिशा दिखाता है। केतु के यहाँ होने का अर्थ है कि **अपारंपरिक या विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में लाभ अधिक होगा** — वे काम जो भीड़ नहीं करती,

वहाँ आप अलग दिखेंगे।

नवम भाव (भाग्य) में मंगल स्वराशि मेष में हैं — यह भाग्य और साहस का मेल है। **जब आप जोखिम उठाते हैं, तभी किस्मत साथ देती है** — सुरक्षित रहकर बड़ा नहीं बना जाता। हर्ष विपरीत राजयोग भी कुंडली में है (छठे भाव का स्वामी दुःस्थान में) — **कठिनाइयों के बाद अप्रत्याशित उन्नति और प्रतिस्पर्धियों पर विजय** — यह इस कुंडली की एक महत्वपूर्ण विशेषता है।

आपके लिए सबसे अनुकूल व्यापार-क्षेत्र:

- **परामर्श, कोचिंग, शिक्षा या प्रशिक्षण** (गुरु लग्न में + बुध D10 नवम में)
- **संचार, मीडिया, डिजिटल या सामग्री-निर्माण** (सूर्य-केतु मिथुन में ग्यारहवें भाव में)
- **वित्त-विक्षेपण या तकनीक-आधारित सेवाएँ** (बुध की भूमिका + शनि का अनुशासन)
- **कोई ऐसा काम जिसमें आपका व्यक्तित्व ही उत्पाद हो** — जहाँ लोग आपसे खरीदें, किसी ब्रांड से नहीं

अभी का समय और आगे की दिशा

अभी सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027) चल रही है। शनि छठे भाव में हैं — यह **परिश्रम, नींव रखने और धैर्य का समय है, तत्काल विस्तार का नहीं**। यह अंतर्दशा संरचना बनाने के लिए है।

फ़रवरी 2027 से सूर्य-बुध अंतर्दशा आएगी — बुध व्यापार और संचार के कारक हैं। **यह अवधि नए व्यापारिक प्रस्ताव, करार और विस्तार के लिए अधिक अनुकूल रहेगी**। अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आएगी — उस समय आप 37 वर्ष के होंगे — और तब व्यापार में एक नया अध्याय खुल सकता है।

योगिनी दशा में अभी भद्रिका (बुध) चल रही है — बुद्धि, वाणी और व्यापारिक लेन-देन का काल। विंशोत्तरी शनि की अंतर्दशा कहती है धीरज से बढ़ो, योगिनी बुध कहती है संचार और संपर्क सक्रिय रखो — **दोनों का सार यह है कि अभी ज़मीन तैयार करें, दिसम्बर 2027 तक फल अपने आप दिखेंगे**।

मुख्य बातें

- **लग्न में युवा, बलवान गुरु** — व्यक्तित्व और विश्वसनीयता आपकी सबसे बड़ी व्यापारिक पूँजी है
- **दशमेश शुक्र बारहवें में** — नौकरी से अधिक अपने नाम से स्वतंत्र काम में संतुष्टि और सफलता
- **साझेदारी में सातवें के स्वामी शनि की सतर्कता** — लिखित अनुबंध और धैर्य से चुना साझेदार ज़रूरी
- **ज्ञान, संचार या व्यक्तित्व-आधारित व्यापार-क्षेत्र** सबसे उपयुक्त — अपारंपरिक में अधिक लाभ
- **फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027** की सूर्य-बुध अंतर्दशा नए व्यापारिक अवसरों के लिए विशेष अनुकूल



उपयुक्त व्यापार-क्षेत्र

अ ध्या य 3

उपयुक्त व्यापार-क्षेत्र

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली जिन क्षेत्रों की ओर सबसे स्पष्ट संकेत करती है, वे वे हैं जहाँ बुद्धि, विश्वास और नेतृत्व — तीनों एक साथ काम आते हैं। आपके लिए केवल "कमाई वाला" व्यापार नहीं चलेगा — वह काम चाहिए जिसमें आप कुछ बनाएँ, कुछ सिखाएँ या किसी समस्या का हल दें।

आपकी कुंडली क्या कहती है — बुनियादी ज्योतिषीय आधार

व्यापार के लिए मुख्यतः तीन भाव देखे जाते हैं — सप्तम (साझेदारी व व्यवसाय), दशम (कर्म व यश) और एकादश (लाभ)। आपके दशम भाव का स्वामी शुक्र है, जो बारहवें भाव में बैठे हैं — अस्त और शत्रु राशि में। इसका सीधा अर्थ है कि परंपरागत, दिखावे वाला, भीड़ वाला व्यापार आपको थकाएगा। **आपका असली यश परदे के पीछे की मेधा से आएगा, सामने की चमक-दमक से नहीं।**

लग्न में गुरु मित्र राशि में युवा अवस्था में हैं — यह आपकी सबसे बड़ी पूँजी है। गुरु विद्या, विस्तार, परामर्श और विश्वास का ग्रह है। नवम भाव का स्वामी मंगल अपनी ही राशि मेष में स्वराशि में बैठे हैं — भाग्य और साहस दोनों की जड़ें गहरी हैं। इन दोनों को मिलाकर देखें तो एक ऐसा व्यापार सबसे अनुकूल है जो ज्ञान, परामर्श, योजना या प्रशिक्षण पर टिका हो और जिसमें साहस से आगे बढ़ने की ज़रूरत हो।

ज्ञान, परामर्श और प्रशिक्षण — आपका स्वाभाविक क्षेत्र

गुरु लग्न में हैं और पंचमेश भी वही हैं — बुद्धि, विद्या और संतान-भाव तीनों पर उनकी छाप है। इसका अर्थ है कि **जो काम दूसरों को समझाने, सिखाने या उनकी समस्या सुलझाने से जुड़ा हो, वह आपको सहज रूप से आता है।**

इस वर्ग में आने वाले क्षेत्र:

- **शिक्षा और प्रशिक्षण** — कोचिंग, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, कार्यशालाएँ
- **प्रबंधन या वित्त परामर्श** — छोटे-मझोले व्यवसायों को दिशा देना
- **कानूनी या नीतिगत सलाह** (यदि उस क्षेत्र में योग्यता हो)
- **मनोविज्ञान, जीवन-कोचिंग या करियर मार्गदर्शन**

योगिनी में इस समय भद्रिका चल रही है — बुध इसके स्वामी हैं, जो वाणी, लेखन और व्यापारिक संवाद के ग्रह हैं। यह 2029 तक

चलेगी। इसका अर्थ है कि अगले तीन-चार वर्ष लिखने, बोलने, सिखाने और संवाद से जुड़े काम में विशेष गति मिल सकती है।

तकनीक, डिजिटल और सृजनात्मक क्षेत्र — दूसरा बड़ा द्वार

दशमांश (D10) में सूर्य लग्न में हैं — यह करियर में स्वतंत्र पहचान और नेतृत्व का संकेत है। मंगल D10 के एकादश भाव में धनु में हैं — लाभ साहसिक और विस्तृत सोच से आएगा। बुध D10 के नवम भाव में तुला में हैं — बौद्धिक और संतुलित दृष्टि से बनाए गए कामों में भाग्य साथ देगा।

इन सबको मिलाकर जो क्षेत्र उभरते हैं:

- **डिजिटल सामग्री निर्माण** — लेखन, पॉडकास्ट, वीडियो, ब्लॉग
- **सॉफ्टवेयर, ऐप्लिकेशन या तकनीकी समाधान** — विशेषकर यदि वे किसी सामाजिक समस्या को सुलझाएँ
- **मीडिया, पत्रकारिता या शोध-आधारित काम**
- **ब्रांडिंग और संचार** — जहाँ शब्द और विचार बिकते हों

बुध बारहवें भाव में हैं, इसलिए **विदेशी बाज़ार, निर्यात, या ऑनलाइन वैश्विक ग्राहक** भी आपके लिए एक स्वाभाविक विस्तार हो सकता है — बारहवाँ भाव विदेश और दूर के सम्बंधों का भाव भी है।

जो क्षेत्र आपको थकाएँगे — एक ज़रूरी बात

शनि षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में हैं — यह शत्रु-विजय और कठिन परिस्थितियों में टिके रहने का बल देता है, पर **इसका अर्थ यह नहीं कि आप थोक व्यापार, बड़े गोदाम, भारी माल-ढुलाई या श्रम-प्रधान उद्योग में सुखी रहेंगे।** शुक्र दशमेश होकर बारहवें में अस्त हैं — इसलिए विलासिता, सौंदर्य-उत्पाद या फैशन जैसे क्षेत्रों में शुरुआत तो हो सकती है, पर टिकाऊ यश वहाँ कम मिलेगा।

जो काम पूरी तरह दूसरों के आदेश पर चले, जहाँ आपकी बुद्धि और स्वतंत्रता का उपयोग न हो — वह आपकी कुंडली के विरुद्ध है।

मुख्य बातें

- **ज्ञान और परामर्श** — शिक्षा, कोचिंग, प्रबंधन सलाह — आपका सबसे स्वाभाविक और टिकाऊ क्षेत्र है; गुरु लग्न में इसकी पुष्टि करते हैं।
- **डिजिटल, लेखन या तकनीकी कार्य** — बुध और भद्रिका योगिनी मिलकर 2029 तक इस दिशा में गति देंगे।
- **विदेश या ऑनलाइन बाज़ार** — बुध और शुक्र का बारहवें भाव में होना इस विस्तार को स्वाभाविक बनाता है।
- **स्वतंत्र काम** — साझेदारी हो तो ऐसी जहाँ आपकी भूमिका स्पष्ट और नेतृत्व की हो; पूरी तरह दूसरे के अधीन काम लंबे समय तक नहीं जमेगा।

• **थोक, श्रम-प्रधान या विलासिता का व्यापार** — इन क्षेत्रों में ऊर्जा लगाने से पहले सोच-समझकर निर्णय लें; आपकी कुंडली इन्हें अनुकूल नहीं बताती।



साझेदारी योग व सावधानी

अ ध्या य 4

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में साझेदारी का विषय अत्यंत सोच-समझकर संभालने वाला है। **सप्तम भाव आपके लिए शुभ फल देने में देर करता है** — पर सही साझेदार के साथ यही भाव आपके व्यापार की सबसे बड़ी ताकत बन सकता है।

साझेदारी का ज्योतिषीय आधार — सप्तम भाव और उसका स्वामी

आपका सप्तम भाव कुम्भ राशि में है और उसके स्वामी शनि हैं। शनि अपने ही भाव — छठे भाव में, स्वराशि मकर में, वक्री अवस्था में बैठे हैं। इसका एक सुखद पहलू यह है कि **शनि अपनी राशि में बलवान हैं** — षड्बल में उनका बल 7.5 रूप है, न्यूनतम से ऊपर। परंतु वक्री होने के कारण उनका फल सीधा नहीं, घुमावदार रास्ते से आता है। शनि की अवस्था कुमार है — अर्थात् फल आधा बनता हुआ है, पूरा अभी नहीं।

इसका सरल अर्थ: **साझेदारी जल्दी नहीं, पर जब बनेगी तो टिकाऊ होगी** — बशर्ते आप धैर्य से सही व्यक्ति चुनें।

सप्तम भाव-कारक शुक्र हैं — पर वे बारहवें भाव में, शत्रु राशि में, अस्त अवस्था में हैं। षड्बल से उनकी अवस्था मृत है। इसका अर्थ यह नहीं कि साझेदारी होगी ही नहीं — इसका अर्थ है कि **साझेदारी में भावनात्मक जल्दबाजी या "अच्छा लगता है" वाले निर्णय आपको महंगे पड़ सकते हैं।** शुक्र की दृष्टि छठे भाव पर है — यह संकेत है कि साझेदारी में विवाद, ऋण या बाधा आने की संभावना है यदि शुरुआत में सतर्कता न बरती जाए।

किस प्रकार का साझेदार आपके लिए अनुकूल है

शनि कुम्भ राशि के स्वामी हैं — कुम्भ बुद्धिजीवी, व्यवस्थित और दूरदृष्टि वाला राशि है। **आपके लिए वह साझेदार अनुकूल रहेगा जो अनुशासित हो, अपना काम चुपचाप करने वाला हो, और जिसमें दीर्घकालीन सोच हो।** चमक-दमक वाला, जल्दी अमीर होने का सपना दिखाने वाला व्यक्ति आपके लिए नहीं बना।

दशमांश (D10) में गुरु बारहवें भाव में हैं — यह बताता है कि करियर में साझेदारी के ज़रिए बड़ी उपलब्धि कभी-कभी पदों के पीछे काम करके ही आती है। आपका असली व्यापारी बल तब निखरता है जब साझेदार मुखर और आप रणनीतिकार हों — या इसका उल्टा।

हर्ष विपरीत राजयोग — साझेदारी में कठिनाई के बाद उन्नति

आपकी कुंडली में **हर्ष विपरीत राजयोग** है — छठे भाव के स्वामी शनि दुःस्थान (छठे) में ही बैठे हैं। यह योग बताता है कि **व्यापारिक विवाद, प्रतियोगिता या साझेदारी की कठिनाई अंततः आपके पक्ष में पलटती है।** यदि कोई साझेदारी टूटी भी, तो उसके बाद की राह पहले से बेहतर निकली।

इसका व्यावहारिक अर्थ — घबराइए नहीं, पर सतर्क रहिए। बुरा समय आए तो टिके रहें।

अभी का समय और आगे का मोड़ — फ़रवरी 2027 तक सावधानी

अभी सूर्य महादशा में शनि की अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चल रही है। शनि सप्तमेश हैं, इसलिए यह दौर साझेदारी के प्रश्नों को सतह पर ला रहा है। गोचर में शनि इस समय मीन राशि में वक्री हैं — जन्म-लग्न से आठवें भाव में। **यह समय नई साझेदारी के लिए जल्दबाज़ी का नहीं है।**

फ़रवरी 2027 के बाद सूर्य-बुध की अंतर्दशा आएगी — बुध व्यापार और वाणी के कारक हैं, और भद्रिका योगिनी (जिसका स्वामी भी बुध है) 2029 तक चलेगी। **मार्च 2027 के आसपास साझेदारी की बातचीत के लिए यह समय अधिक अनुकूल रहेगा।**

मुख्य बातें

- **सप्तमेश शनि बलवान हैं** — साझेदारी असंभव नहीं, पर धैर्य और समझदारी से होगी
- शुक्र की कमजोरी बताती है — **भावना में बहकर साझेदारी न चुनें, परखकर चुनें**
- हर्ष राजयोग आपका रक्षक है — कठिनाई आए तो भी आप अंततः ऊपर निकलते हैं
- **फ़रवरी 2027 तक नई बड़ी साझेदारी का निर्णय धीमा रखें**; मार्च 2027 के बाद अनुकूल समय आता है
- हर समझौते में लिखित शर्तें अनिवार्य हैं — शनि का साझेदार कागज़ पर चलता है, जुबान पर नहीं



व्यापार-वृद्धि का समय

अ ध्या य 5

व्यापार-वृद्धि का समय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली का सबसे महत्वपूर्ण सत्य यह है — **आपका सबसे बड़ा व्यापारिक उछाल अप्रैल 2029 से पहले नहीं,**

बाद में आएगा। अभी जो समय है, वह बीज बोने का है, फ़सल काटने का नहीं — और यह समझ लेना ही सबसे बड़ी समझदारी है।

अभी का समय — सूर्य महादशा, शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2026 – फ़रवरी 2027)

इस समय आप 34 वर्ष के हैं और सूर्य की महादशा में शनि की अंतर्दशा चल रही है। सूर्य आपके लग्नेश हैं और ग्यारहवें भाव में विराजमान हैं — यानी लाभ-भाव में। यह शुभ स्थिति है, पर सूर्य की अवस्था मृत है, इसलिए **फल पूरा नहीं, धीरे-धीरे और प्रयास से मिलेगा।**

शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — यह हर्ष विपरीत राजयोग बनाता है। इसका सीधा अर्थ है: इस अंतर्दशा में प्रतिस्पर्धा कड़ी रहेगी, शत्रु या रुकावटें सामने आएँगी — पर अंत में **आप ही जीतेंगे।** शनि वक्री हैं, इसलिए फल में देर है, पर वह टिकाऊ होगा।

योगिनी में इस समय भद्रिका (बुध) चल रही है और अंतर्-योगिनी सिद्धा (शुक्र) — मार्च 2026 से फ़रवरी 2027 तक। **भद्रिका बुद्धि, वाणी और व्यापारिक लेन-देन में गति देती है** — यह समय बातचीत, समझौते, नई योजनाएँ बनाने के लिए अनुकूल है। पर विंशोत्तरी और योगिनी दोनों अलग-अलग ग्रह बोल रहे हैं, इसलिए संकेत मिश्रित हैं — बड़ा दाँव लगाने का नहीं, रणनीति सँवारने का समय है।

फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027 — सूर्य-बुध अंतर्दशा: व्यापार की गति बढ़ेगी

बुध आपके ग्यारहवें भाव के स्वामी हैं और लाभ के कारक भी। हाँ, वे बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं — इसलिए **लाभ आएगा पर खर्च भी साथ चलेगा।** बुध की अवस्था कुमार है — आधा फल, पर बनता हुआ। इस अंतर्दशा में आपकी उम्र 35-36 वर्ष होगी — यह समय व्यापार में नए संपर्क बनाने, डिजिटल या संचार-आधारित काम बढ़ाने और पुराने लेन-देन सुलझाने के लिए सबसे उचित है।

बुध की दृष्टि छठे भाव पर है — यानी इस दौर में आप प्रतिस्पर्धियों से आगे निकलने में सफल हो सकते हैं, बशर्ते कागज़ी काम व हिसाब-किताब सँभालकर रखें।

अप्रैल 2029 — चंद्र महादशा का आरंभ: असली उड़ान यहाँ से

जब आप 37 वर्ष के होंगे, चंद्र की महादशा आरंभ होगी — अप्रैल 2029 से अप्रैल 2039 तक। **यह आपकी कुंडली का सबसे निर्णायक व्यापारिक दशक है।**

चंद्र आपके चौथे भाव में हैं — सुख, स्थायित्व और भूमि-सम्पत्ति का भाव। और देखिए — **चंद्र से दशम भाव (कर्म-भाव) में गुरु विराजमान हैं** — यह गजकेसरी योग है, जो यश, बुद्धि और समाज में सम्मान देता है। चंद्र महादशा में यह योग जागेगा।

दशमांश कुंडली (D10 — करियर व व्यापार की विशेष कुंडली) में मंगल ग्यारहवें भाव में धनु राशि में हैं — **लाभ-भाव में** — और शनि व

शुक्र तीसरे भाव में एक साथ हैं। यह संयोजन बताता है कि परिश्रम और साझेदारी मिलकर लाभ देंगे। **D10 का लग्न कुम्भ है और सूर्य वहाँ लग्न में — नेतृत्व की स्पष्ट छाप।**

गोचर का साथ — अभी और आगे

आज गोचर में **गुरु कर्क राशि में हैं** — जन्म-लग्न से बारहवें भाव में। यह व्यय और पर्दे के पीछे की योजनाओं का समय है; बड़ा निवेश या बड़ा विस्तार अभी नहीं। **गुरु 31 अक्तूबर 2026 को कर्क से निकलेंगे** — उसके बाद जब वे सिंह (आपका लग्न) में आएँगे, तब लग्न पर उनकी सीधी कृपा होगी। यह आपके लिए बड़ा मोड़ होगा।

गोचर शनि मीन राशि में वक्री हैं — जन्म-लग्न से आठवें भाव में। यह ठहराव और आंतरिक पुनर्निर्माण का समय है। **शनि 11 दिसम्बर 2026 को मार्गी होंगे** — उसके बाद काम की गति सहज हो जाएगी।

सप्तम भाव पर गुरु की दृष्टि है — साझेदारी में शुभ संभावना है, पर शनि की दृष्टि आठवें भाव पर है, इसलिए हर क़दम सोच-समझकर।

मुख्य बातें

- **अभी (2026–27) का समय रणनीति बनाने का है** — बड़ा विस्तार फ़रवरी 2027 के बाद करें, जब बुध अंतर्दशा आएगी।
- **फ़रवरी से दिसम्बर 2027** — व्यापारिक संपर्क, नए ग्राहक और लेन-देन के लिए अनुकूल; आप तब 35-36 वर्ष के होंगे।
- **अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा** — यह आपकी असली व्यापारिक छलाँग का दशक है; गजकेसरी योग इसी में फलेगा।
- **31 अक्तूबर 2026 के बाद गुरु का राशि-परिवर्तन** एक छोटा पर सकारात्मक मोड़ लाएगा।
- **हर्ष विपरीत राजयोग की शक्ति** यह है कि **कठिनाई के बाद जो आएगा, वह स्थायी होगा** — धैर्य ही आपका सबसे बड़ा व्यापारिक हथियार है।



विस्तार व लाभ-वृद्धि

अ ध्या य 6

विस्तार व लाभ-वृद्धि

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में लाभ का भाव (ग्यारहवाँ) अत्यंत बलशाली है — भाव-बल 12.94, और सूर्य व केतु यहाँ विराजमान हैं। **विस्तार आपकी नियति में है, पर उसका समय और रास्ता कुंडली बड़े स्पष्ट शब्दों में बताती है।**

लाभ भाव — आपकी सबसे बड़ी शक्ति

ग्यारहवाँ भाव आय, इच्छापूर्ति और नेटवर्क का घर है। इस भाव का स्वामी बुध है — जो बारहवें भाव में बैठे हैं। इसका अर्थ यह है कि **लाभ सीधे सामने से नहीं, परदे के पीछे से आता है** — किसी अनदेखे सम्पर्क से, किसी पुराने काम से, या ऐसे स्रोत से जिसकी आपने कल्पना भी न की हो। जो व्यक्ति दिखते नहीं, वे आपके काम आते हैं; जो शोर में नहीं होता, वही टिकाऊ कमाई बनाता है।

सूर्य यहाँ बैठे हैं — बल 9.86, यानी सबसे बलवान ग्रह। **सूर्य की यह स्थिति यश व प्रतिष्ठा को लाभ का माध्यम बनाती है** — जितना नाम होगा, उतनी आय बढ़ेगी। आपकी पहचान ही आपकी सबसे बड़ी सम्पत्ति है।

विस्तार की दिशा — कहाँ लगाएँ ऊर्जा

दशमांश कुंडली (D10) में मंगल, चंद्र और शुक्र तीसरे भाव (पराक्रम व उद्यम) में हैं — और मंगल ग्यारहवें भाव में बैठकर लाभ पर दृष्टि डाल रहे हैं। यह स्थिति कहती है कि **विस्तार प्रतीक्षा से नहीं, सक्रिय उद्यम से आएगा।**

- जो काम आप अब कर रहे हैं, उसे एक नए बाज़ार या नए माध्यम तक ले जाएँ — भौगोलिक विस्तार आपके लिए फलदायी है
- बुध बारहवें में हैं और भद्रिका योगिनी (बुध की) अगस्त 2029 तक चल रही है — **डिजिटल, लेखन, परामर्श या जानकारी आधारित कार्य में विस्तार इस पूरी अवधि में अनुकूल रहेगा**
- गुरु अभी गोचर में बारहवें भाव से गुजर रहे हैं (कर्क राशि, अक्टूबर 2026 तक) — यह समय बड़े खर्च या निवेश के लिए नहीं, बल्कि अदृश्य नींव रखने के लिए है

अभी का समय — क्या होगा और कब

सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027) चल रही है। शनि छठे भाव में स्वराशि में हैं — **यह अंतर्दशा विस्तार की नहीं, व्यवस्था की है।** जो ढाँचा अभी खड़ा करेंगे — टीम, प्रक्रिया, लेखा-जोखा — वही आगे विस्तार को संभालेगा।

फ़रवरी 2027 से बुध की अंतर्दशा आएगी — बुध लाभेश हैं, और बुध की योगिनी (भद्रिका) पहले से चल रही है। यह दोनों का मेल एक उल्लेखनीय अवधि बनाता है। **फ़रवरी से दिसम्बर 2027** — यह वह खिड़की है जब नए अनुबंध, नई आय के स्रोत और नेटवर्क का विस्तार सबसे सहज होगा। तब आप 35-36 वर्ष के होंगे — ठीक वह उम्र जब व्यापार में एक बड़ा मोड़ आता है।

गोचर में बुध अभी कन्या राशि में हैं (26 सितम्बर 2026 तक) — बुध की स्वराशि। **अभी के दो सप्ताह अनुबंध, वार्तालाप और नई बातचीत के लिए अनुकूल हैं।**

एक सावधानी — जो चूक सकती है

शुक्र और बुध दोनों बारहवें भाव में हैं — **लाभ का फल प्रायः हाथ से निकल जाने वाला लगता है, या खर्च में बदल जाता है।** इसलिए जब भी लाभ आए, उसका एक हिस्सा तुरंत अलग रख दें। बुध की दशा में यह अनुशासन — हर आय का एक तय प्रतिशत संचित करना — सबसे बड़ा उपाय है।

मुख्य बातें

- **लाभ भाव बलशाली है** — विस्तार आपकी कुंडली में है, केवल सही समय और माध्यम चाहिए
- **प्रतिष्ठा और नाम ही आपकी असली आय का स्रोत हैं** — सूर्य का ग्यारहवें भाव में होना यही कहता है
- **अभी (सितम्बर 2026 तक) अनुबंध और बातचीत के लिए अनुकूल** — बुध गोचर स्वराशि में
- **फ़रवरी से दिसम्बर 2027** — विस्तार और नई आय का सबसे महत्वपूर्ण दौर
- **अभी व्यवस्था बनाएँ, विस्तार तैयार है** — शनि अंतर्दशा यही माँग रही है



व्यापार-समृद्धि हेतु उपाय

अध्याय 7

व्यापार-समृद्धि हेतु उपाय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में समृद्धि के सभी बीज मौजूद हैं — बस उन्हें सही ग्रहों की ऊर्जा चाहिए। यहाँ जो उपाय बता रही हूँ, वे इसी कुंडली से निकले हैं — सबको दिए जाने वाले सामान्य उपाय नहीं।

गुरु के साथ चलना — आपका सबसे बड़ा उपाय

आपके लग्न में गुरु विराजमान हैं, युवा अवस्था में और मित्र राशि में — यह आपकी सबसे बड़ी शक्ति है। **गुरु के साथ चलने का अर्थ है: जो जानते हैं वह दूसरों को सिखाएँ, और जो नहीं जानते वह किसी से सीखें — दोनों रोज़।** व्यापार में यह नियम सबसे तेज़ काम करता है। किसी एक व्यक्ति को — चाहे वह ग्राहक हो, साथी हो — हर दिन कुछ सिखाएँ बिना प्रतिफल माँगे। गुरु का फल धीरे-धीरे नहीं, सहज रूप से बढ़ता है।

साथ ही, भोजन और वाणी में संयम रखें — गुरु का यह स्वभाव है। जो बात करें वह पूरी और सच्ची हो; व्यापार में अतिशयोक्ति गुरु को कमज़ोर करती है।

सूर्य को जगाना — मृत अवस्था में बैठे महादशा-स्वामी

अभी सूर्य महादशा और शनि अंतर्दशा चल रही है। सूर्य ग्यारहवें भाव में हैं और बल भरपूर है — पर अवस्था मृत है, इसलिए उनकी आवाज़ दबी हुई है। **उन्हें जगाने का सबसे सीधा रास्ता है: हर सुबह सूर्योदय के आसपास उठें और 15-20 मिनट धूप में बैठें — यही इस दशा का सबसे ज़रूरी काम है।**

रीढ़ सीधी रखें, आत्म-सम्मान से बात करें। व्यापार में जहाँ आप स्वयं को छोटा महसूस करते हों — वहाँ सुधार सूर्य का असली उपाय है। माणिक रत्न इस समय और भी उपयुक्त है — यह आपका जीवन-रत्न भी है और अभी महादशा-स्वामी का भी। 6-7 रत्ती, ताँबे की अँगुठी में, रविवार को धारण करें।

शनि का धैर्य — अंतर्दशा का सबसे बड़ा सबक

शनि आपके छठे भाव में स्वराशि में बैठे हैं और हर्ष विपरीत राजयोग बना रहे हैं — कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति। **इस अंतर्दशा में शनि के साथ चलने का अर्थ है: समय की पाबंदी, शॉर्टकट का पूरा त्याग, और एक काम रोज़ बिना नागा।** व्यापार में जो काम टालते आए हों — हिसाब, लेखा, ग्राहक से अनुसरण — वह कल से आरंभ करें।

शनिवार को किसी ज़रूरतमंद मज़दूर या सेवक की सहायता करें — सादगी से, बिना दिखावे के। यह शनि का सबसे टिकाऊ उपाय है।

मुख्य बातें

- **गुरु:** हर दिन कुछ सिखाएँ, वाणी में संयम — यह लग्न की सबसे बड़ी शक्ति है
- **सूर्य:** सूर्योदय पर उठना और धूप — मृत अवस्था को जगाने का एकमात्र रास्ता
- **माणिक:** जीवन-रत्न और महादशा-स्वामी — दोनों एक, इसलिए और भी उपयुक्त (koustubhgems.com पर प्रमाणित उपलब्ध)
- **शनि:** पाबंदी और निरंतरता — हर्ष विपरीत राजयोग का फल तभी मिलेगा
- **भय नहीं, दिशा:** उपाय यह नहीं कि "न किया तो अनर्थ" — यह बस वह रास्ता है जो आपकी कुंडली पहले से जानती है

॥ शास्त्र-प्रमाण ॥

यस्य यश्च यदा दुःस्थः स तं यत्नेन पूजयेत् ।

एषां धात्रा वरो दत्तः पूजिताः पूजयिष्यथ ॥

जिसका जो ग्रह पीड़ित हो, वह यत्नपूर्वक उसकी उपासना करे। ब्रह्मा ने ग्रहों को वर दिया है — "पूजित होकर तुम भी पूजक का मान रखोगे।"

— बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, अध्याय ८४

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ व्यापार रिपोर्ट ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖
यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।